International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(3): 13-15

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(3): 13-15
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-03-2020
Accepted: 12-04-2020

डॉ वेदप्रकाश मिश्र
प्रोफेसर संस्कृत विभाग,
डॉ सी.वी. रमन विश्वविद्यालय,
कार्गी रोड, कोटा,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

इंदु पटेल
एम फिल संस्कृत, डॉ सी.वी. रमन विश्वविद्यालय,
कार्गी रोड, कोटा,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Corresponding Author:

डॉ वेदप्रकाश मिश्र
प्रोफेसर संस्कृत विभाग,
डॉ सी.वी. रमन विश्वविद्यालय,
कार्गी रोड, कोटा,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

पर्यावरण : महावीरचरितम् के संदर्भ में

डॉ वेदप्रकाश मिश्र, इंदु पटेल

पर्यावरण की व्युत्पत्ति है परि +आङ्+वृ+ल्युट् "परितः आव्रियतेऽनेनेति पर्यावरणम्" या "परितः आसमन्ताद् वृणोति यत् तत् पर्यावरणम्"। इस प्रकार संसार में सभी जीव–जन्तु, जंगम, पर्वत, वृक्षादि स्थावर, सचेतन, अचेतन जिस आवरण से सदैव ढके हुए हैं वे ही पृथिवी, जल, अग्नि, वायु आकाश रुपात्मक पंचमहाभूतात्मक तत्व पर्यावरण के नाम जाने जाते हैं। यदि व्यापक रुप से पर्यावरण को परिभाषित करना चाहें तो हमारा जीवन जिस पर आश्रित है वह सब कुछ पर्यावरण है अथवा हमारे चारों ओर जो वातावरण पारिथितिकी तंत्र है जहां हम जीवन धारण करते हैं वह पर्यावरण है जिसका अन्त व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट और उससे ऊपर ब्रह्माण्ड में है। वेद में इसे परिधि परिभू परिवृत्त कहा गया है:

उर्वीरासन् परिधयो वेदिर्भूमिरकल्पयत् ।
तत्रैतावग्नी आधत्त हिमं ध्नं सं च रोहितः।। अथर्व वेद 13/1/48

इस मंत्र का तात्पर्य है कि संसार की पर्यावरणात्मिका परिधि ही पृथिवी है जहॉ सूर्य, चंद्रमा का प्रकाश निरंतर प्रकाशित होता है जिससे प्राकृतिक यज्ञविधान स्वतः संपादित होते हैं। वही पृथिवी सांसारिक जीवों के परिधिरुप से संरक्षण करती है।
यस्यां समुद्र उत् सिन्धुरापो यस्यामन्नंकृष्टयः संबभवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् स नो भूमिः पूर्वपेदे दधातु।। अथर्व वेद 12/1/3
इस मंत्र में स्पष्ट रुप से यह प्रतिपादित किया गया है कि यह पृथिवी जल, अन्न आदि से हमें समृद्ध कर हमारा पालन– पोषण करते हुए हमारी संरक्षिका के रुप में है। प्रकृतिविषयक मंत्रों में भी जल वाष्प और औषधियों के लिए "छान्दस"पद प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ पर्यावरणतत्व ही है। क्योंकि ये तीनों ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को आवृत्त किये हुये है –

त्रीणि च्छन्दसि कवयो वि, येतिरे पुरुरुपं दर्शतं विभ्रचक्षणम्।
आपो वाता औषधयः, स्तान्येकस्मिन् भुवन अर्पितानि।। अथर्ववेद 18/1/17

इस प्रकार आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक, सम्पूर्ण चराचर जगत और उसमें अन्तर्निहित सभी सूक्ष्मातिसूक्ष्म सभी तत्व पर्यावरण में सम्मिलित हैं। पाश्चात्य विद्वान हालैण्डडगलस का मत है कि जीवजगत के प्राणियों का विकास प्रकृति व्यवहार जीवनयापनशैली और अनुभव की जाने वाली सभी बाह्यशक्तियां परिस्थितियां घटनाएं पर्यावरण में सम्मिलित हैं। रासेल का अभिमत है –जहां जीवजन्तु निवास करते हैं, और विकासोन्मुखी होते हैं, उनका सम्पूर्ण समन्वय और प्रभावशील दशा को ही पर्यावरण कहते हैं। मैकाईवर महोदय स्वीकार करते हैं कि पृथ्वीपृष्ठ के ऊपर हो रही सभी प्राकृतिकदशा प्राकृतिकसंसाधन जैसे –भूमि, जल, पर्वत, क्षेत्र, नदी झील, खनिज, वनस्पति, पशु और बिजली आदि जो मानवीय जीवन को प्रभावित करते हैं वे सभी पर्यावरण में सम्मिलित हैं। अर्वाचीन संस्कृतरचनाकार डॉ राधावल्लभत्रिपाठी लिखते हैं कि–

साहित्ये बिम्बते काचित् पर्यावरणचेतना।
साहित्यं चापि निर्माति स्वं पर्यावरणं स्वयम्।। अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्ये पर्यावरण चेतना

डॉ. रामदयालसिंहकृत् पर्यावरण अध्ययन में संसार की मौलिकसंरचना के आधार पर पर्यावरण के दो विभाग करते हैं –

1. भौतिक अजैविक वातावरण 2 जैविकवातावरण

कुछ अन्य विद्वान समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए पर्यावरण के तीन भेद करते हैं–

1. भौतिक या अजैविक पर्यावरण– इसके अंतर्गत स्थलमंडल, जलमंडल और वायुमंडल परिगणित होते हैं।
2. जैविक पर्यावरण– इसमें वानस्पतिक जगत, समस्त पशुजगत और सम्पूर्ण मानवीय जगत की गणना की जाती है।
3. सामाजिक पर्यावरण– इसमें मनोवैज्ञानिक,राजनीतिक सांस्कृतिक आर्थिक और धार्मिक तत्व स्वीकार किये जाते ह।

तथापि प्रस्तुत आलेख में विषयप्रतिपादन की सरलता के लिए पर्यावरण को दो भागो में विभक्त किया गया है।

1. प्राकृतिक पर्यावरण– इसमें जैविक या अजैविक दोनों प्रकार सम्मिलित हैं जैसे भूमि जल तेज वायु आकाश ध्वनि पर्वत वृक्ष लता आदि।
2. सांस्कृतिक पर्यावरण – इसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक, आध्यात्मिक, संस्कारात्मक, सूक्ष्ममनोविज्ञान और सबसे ऊपर मानवीयसंवेदना सम्मिलित हैं।

इन पंचमहाभूतात्मक पर्यावरणतत्वों जैविकसत्तारक्षणात्मकों और सांस्कृतिक पर्यावरणों के प्रदूषण विघटन और विनाशात्मक कार्यों में उद्यत हम लोगों ने अपने भौतिक–सुख की खोज में तथाकथित प्रगतिवादी कहलाने वाले लगातार अपने पैरों में कुल्हाडी मारने वाले के समान घातक बनकर कितने अविद्यापतित हो रहे हैं, नियतिकृत नियमों को तोडकर प्राकृतिक और सांस्कृतिक दोनो प्रकार के पर्यावरण को जो हमारे द्वारा प्रदूषित किया जा रहा है, वह हमारी अज्ञानता है अथवा अचैन्य भाव का द्योतक है अतः इस पर्यावरणसंरक्षण विषयक जनचेतना के उद्‌बोधन के लिए भवभूति का जो अभिमत है जैसा चिंतन है उसी पर आधारित यह आलंख हैं।

संस्कृत के कवि नाटककार सौन्दर्य तथा माधुर्य के उपासक होते हैं। उनका हृदय सौमय भाव में विशेष रमता ह। माधुर्य के उत्पादक दृश्यों के उपर दृष्टि विशेष रीझती है। वे मानव हृदय के भावों के समझाने तथ। विश्लेषण में जितने कृतकार्य है उतने ही वे बाह्य प्रकृति के भी रहस्यों के परखने तथा उद्‌घाटन में समर्थ हैं। बाह्य प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण संस्कृत काव्यों में, विशेषतः प्राचीन काव्यों में प्राप्त होता है। प्रकृति के दृश्यों को कवियों नाटककारों ने अपने तीव्र अवलोकन का विषय बनाया है तथा यथार्थता से मण्डित वर्णनों का चमत्कार सरसहृदयों के हृदय को बलात् अपनी ओर खीचता है। प्रकृति संस्कृत नाटकों में उभयरुपेण चित्रित की गई है। आलम्बन के रुप में तथा उद्‌दीपन रुप में । आलम्बन रुप वाले वर्णनों में प्रकृति ही स्वयं वर्ण्य रहती है तथा उद्‌दीपन रूप में उसका मानव–प्रकृति के ऊपर उत्पन्न प्रभाव ही वर्णन का विषय रहा है भवभूति ने उत्तररामचतिम् में लिखा–

"श्रयति शिखरमदगेर्नूतनस्तोयवाहः" ।।

वर्षा के आगमन का वर्णन करते हुए चिंतन करते हैं वर्षा की बूंदें जल से संभृत मानो भाराक्रान्त था। इसलिए वह आश्रय–विश्राम लेता है।

बानीर की बेल पर बैठे हुए पक्षी के चित्र से और उसे "समद" कहकर सूचित की हुई उसके स्वर की ध्वनि से यह वर्णन अतीव हृदयंगम बन गया है।

इहसमदशकुन्तलाक्रान्तवानीरवीरुत्, प्रसवसुरभिशीतस्वछतोया वहन्ति।
फलभरपरिणामश्यामजम्बूनिकुंज, स्खलनमुखरभूरिस्रोतसो निर्झरिण्यः।। उत्तररामचरित 2/10

श्रीराम सीता को इंगुदीवृक्ष का वर्णन इस प्रकार करते है–

इंगुंदीपादपः सोऽयं श्रृगवेरपूरे पुरा।
निषादपतिना यत्र स्निगधेनासीत्समागमः

स्वच्छ और पवित्रजलवाली भगवती भागीरथी को श्रीराम रघुकुल की देवी कहकर नमस्कार करते हुये कहते हैं– हे भगवति !सागर–यज्ञ में घोडे की खोज में व्यग्र, धरती खेद छालने वाले क्रोध से कपिल मुनि के तेज में जले पिता के पितामहों को भगीरथ ने शारीरिक कष्ट की अपगणना कर तपस्या करके बहुत समय के पश्चात् तुम्हारा जल–स्पर्श कराके तारा थां

लक्ष्मण कहते हैं– यह है भरद्वाज के बताये चित्रकुट जानेवाले मार्ग पर यमुना–तट स्थित श्याम नाम का बटवृक्ष, इस प्रकार यहॉ बटवृक्ष को महत्त्व दिया गया है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण का संगम श्रीराम के कथन से मिलता है–पहाडी झरनों के तटों पर वनप्रस्थि यतियों द्वारा सेवित वृक्षों से युक्त ये तपोवन है जिनमें अतिथि–सत्कार में तत्पर मुटठी भर नीवार अन्न पकानेवाले नियमधारी गृहस्थ मुनिजन घर बनाकर रहते हैं।

प्रस्रवण नामक पर्वत, कुंजावान् पर्वत ऋष्यमूक पर्वत, पम्पासरोवर, गोदावरी नदी, पंचवटी ऋष्यश्रृंग आश्रम आदि का वर्णन नाटककार की प्रकृतिप्रेम को च्यक्त करता है।

नाटककार ने दण्डकारण्य का वर्णन इस प्रकार किया है–

स्निग्धश्यामाः क्वचिदपरतो भीषणाभोगरुक्षाः
स्थाने स्थाने मुखरककुभो झांकृतैर्निर्झराणाम्।
एते तीर्थाश्रमगिरिंसरिद्‌गर्तकान्तारमिश्राः
संदृश्यन्त परिचितभुवो दण्डकारण्यभागाः।।

आज पर्यावरण संरक्षण को लेकर सभी चिंतित हैं क्योकि पर्यावरण संरक्षण के अभाव में भविष्य अंधकारमय होगा। भारत में पर्यावरण के सम्मान एवं संरक्षण की प्राचीन परंपरा रही है। संस्कृत वांग्मय में वैदिक साहित्य से लेकर अर्वाचीन साहित्य तक संम्पूर्ण साहित्य में प्रकृति–प्रेम प्रकृति–चित्रण हमारे ऋषि मुनियों कवियों नाटककारो गद्यकारों का प्रिय विषय रहा है।

'ओम् द्यौः शान्तिन्तरिक्ष शान्तिः पृथ्वीशान्तरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्बह्मशान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि'।[7]

इस मंत्र में समस्त प्राकृतिक आवरणों की शान्ति के लिए प्रकारान्तर से पर्यावरण के संरक्षण के लिए कामना की गई है। विविध वैदिक यज्ञों का प्रविधान भी इसी के लिए है। इसी तरह पुराण उपनिषद् रामायण महाभारत आदि में पर्यावरण की चर्चा है। चूंकि भारतीय संस्कृति में धर्म का विशिष्ट स्थान है अतः धार्मिक आख्यानों उपदेशों सूक्तियों श्लोकों के माध्यम से प्रकृति–प्रेम के विषय में प्रेरित किया गया है।

अतः इस पर्यावरण विषयक जनचेतना के उद्‌बोधन के लिए महावीरचरित में भवभूति का जो अभिमत है जैसा चिंतन है। भवभूति ने अपने नाटकों में वर्षा की बूंद, बानीर की बेल, पक्षी, नदी, यज्ञ, दण्डकारण्य, जटायु आदि समस्त प्राकृतिक तत्वों की चर्चा की है।

महावीरचरित में सीताहरण के बाद लक्ष्मण से कहते हैं–भाई लक्ष्मण तुम क्या नहीं देखते कि कदम्ब विकसित होने जा रहे हैं अत्यन्त मधुर स्वर वाले नीलकंठ नाच रहे हैं। काले वर्ण की ऊपर घुमडती हुई नूतन मेघमाला पर्वत के शिखर पर लटक रही हैं। माल्यवान ने नाटक के विभिन्न घटनाओं की समानता वृक्ष के विभिन्न अवयवों से दी है–सीता की प्रार्थना ही वृक्ष का बीज है, सूर्पणखा का राम–लक्ष्मण की बंचना के लिए जाना ही अंकुर है, उन्हे मोहने के लिए मारीच की माया किसलय है, सीता का अपहरण शाखायें हैं,

बालि का बध तथा विभीषण का वहॉ जाना तथा उन दोनों की मैत्री ही इसके कोरक हैं।नाटककार ने नाटक में प्राकृतिक दृश्यों का सूक्ष्मतापूर्वक चित्रण किया है साथ ही मानव हृदय का ऐसा सूक्ष्म चित्रण किया है जो कम जगह ही देखने को मिलता है।

भवभूति चेतन मानवीय प्रकृति के ही सच्चे विश्लेषक नही हैं,बल्कि बाह्य प्रकृति के भी सफल चित्रकार हैं। उन्होने प्रकृति का निरीक्षण बडी सावधानी से किया था। कालिदास ने प्रकृति के केवल सुकुमार पक्ष कोमल पहलू का ही वर्णन किया है परन्तु भवभूति की दृष्टि विशेष कर उसके उग्र भयंकर तथा विषम पक्ष पर ही गडी थी। तभी वे लिखते हैं– जंगल का काई भाग बिल्कुल शान्त है कहीं जानवरों की प्रचंड ध्वनि सुनाइ पडती है कहीं पर स्वेच्छया सोये हुये विस्तृत फनवाले सर्पो के रूवास से आग पैदा हो रही है । जल का नाम नहीं है,हीं–कहीं छोटी गडहियों में थोडा सा पानी झिलमिला रहा है,,बिचारे प्यासे गिरगिटों को पानी नहीं मिलता। क्या करें अजगर के पसीने को पी कर ही अपनी प्यास बुझाते हैं।कितना भयानक दृश्य है प्रचंड ग्रीष्म के सन्ताप का।

महावीरचरित के प्रथम अंक में सूत सिद्धाश्रम का वर्णन करते हुये कहता है–

दृश्यते हरितपरिसरारण्यरमणीयं कौशिकीपरिक्षिप्तमायतनमृषेस्तस्य सिद्धामपदं नाम।

तभी राजा कहता है– सूत, न केनचिदाश्रमाभ्यर्णभूमयोअतिक्रमयित्व्या इति।

पंचम अंक में जटायु के द्वारा गोदावरी का वर्णन है–

एषोऽस्मि प्रलयमरुत्प्रचंडरंहः, संक्षिप्तप्रथिम पिबन्निवान्तरिक्षम्।
क्षेपीयो मलयगिरेर्निवासभूभृ, त्संसक्तक्षितिरुहजालमभ्युपेतः।।

अयमविरलानोकहनिनवहनिरन्तरस्निग्धनीलपरिसराण्यपरिणद्धगोदावरी मुखकन्दरः सततनिश्यन्दमानमेघमेदुरितनीलिमा जनस्थानमध्यगः गिरिप्रस्रवणो नाम।

पंचम अंक में लक्ष्मण पर्वत का वर्णन करते हुये कहते हैं– प्रशान्तगम्भीरनीलविपुलश्रीररण्यगिरिभूमिः प्रसज्यते।

पंचम अंक में ही मतंगाश्रम का वर्णन इस प्रकार मिलता है–

तथा चाग्रतो मतंगाश्रमपदम्। यत्र चिरशून्येऽपि संनिहिततमसोमचमसादिविविधपात्रपरिकर
आस्तीर्णबर्हिरिध्मवानाज्यगन्धिस्चापि भगवान्चैश्वानरः समिध्यते।

इहसमदशकुन्ताक्रान्तवानीरमुक्त, प्रवसुरभिशीतस्वच्छतोया वहन्ति।
फलभरपरिणामश्यामजम्बूनिकूंज, स्खलनमुखरभूरिस्रोतसो निर्झरिण्यः।।

पंचम अंक में लक्ष्मण कदम्ब वन का वर्णतकर कहते है–

प्रवृत्तपौरस्त्यमारुतवितन्यमानकदम्बानिकाननानिसंगलितवाष्पपटलयादृ शा.परिक्षिप्यधनुरवष्टम्भधीरधारित– शरेणार्येण संप्रति स्थीयते।

पंचम अंक में कावेरी के पास सुपारी वन का वर्णन इस प्रकार है–

यत्पर्यन्महीध्सीम्नि कुहलीमाध्वीकधारोछिगर,
द्धृष्यत्पूगवनीघनीकृततलैस्तुंगैर्जरच्छाखिभिः।

सप्तम अंक में सुगीव उदयाचल अस्तसचल का वर्णन करते हैं–

उदयास्ताचलावेतौ यत्क्रोडे बाल्यवार्धके।
विस्रम्भाच्चन्द्रसूर्याभ्यामतीयेते विनिर्भयम्।।

सप्तम अंक में कैलाश और अंजन पर्वतों का वर्णन इस प्रकार है–

कैलासांजनशैलावेतौ तुल्योन्ननत्वपरिहाणौ
चन्दनमृगमदलेपं गमितौ क्षौण्या नु वक्षौजौ।।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि नाटककार भवभूति ने महावीरचरित में पर्यावरण संरक्षण विषयक अनेक तत्वों की विवेचना की है जो आज के संदर्भ में अवश्य ही अनुकरणीय है।

सन्दर्थ ग्रन्थ

1. संस्कृत वांग्मय में पर्यावरण चेतना शास्त्री डॉ शंकर लाल हंसा प्रकाशन जयपुर 2009
2. वेद यज्ञ और पर्यावरण गौतम डॉ सूर्यनारायण एजुकेशनल बुक सर्विस नई दिल्ली 2014
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास उपाध्याय आचार्य बलदेव
4. उत्तररामचरितम् चौखंभा संस्कृत संस्थान वाराणसी
5. संस्कृत के प्रमुख नाटककार तथा उनकी कुतियों राय डॉ गंगासागर चौखंभा संस्कृत भवन वाराणसी वि सं 2058